नवभारत
। संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी । प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी ।

ऑपरेशन सिंदूर : भारत की बदलती सैन्य दृष्टि

संसद के मानसून सत्र में सोमवार को विशेष चर्चा के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने जब लोकसभा में 'ऑपरेशन सिंदूर' की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की, तो यह सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई की जानकारी नहीं थी, बल्कि यह स्पष्ट कर दिया गया कि भारत अब न केवल आतंकवाद के खिलाफ सख्त है, बल्कि उसकी सैन्य रणनीति भी निर्णायक, सटीक और सशक्त बन चुकी है. 6 और 7 मई 2025 को हुए इस ऐतिहासिक सैन्य ऑपरेशन ने न केवल पाकिस्तान पर निर्णायक मानसिक और सामरिक दबाव बनाया, बल्कि देश की जनता में आत्मविश्वास का संचार भी किया.

भारत ने वर्षों तक आतंकवाद के खिलाफ संयम और राजनयिक प्रयासों की नीति अपनाई, लेकिन यह भी स्पष्ट होता गया कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को सिर्फ कूटनीति से नहीं रोका जा सकता. ऑपरेशन सिंदूर इस सच्चाई की प्रतिक्रिया है. यह एक सर्जिकल स्ट्राइक मात्र नहीं, बल्कि आतंकवाद को लेकर भारत की 'जीरो टॉलरेंस' नीति का स्पष्ट सैन्य प्रदर्शन है.

रक्षा मंत्री ने बताया कि इस ऑपरेशन के तहत नौ आतंकी ठिकानों को तबाह किया गया और 100 से अधिक आतंकी मारे गए. इसमें जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों के टॉप कमांडर भी शामिल थे, जो पाकिस्तान की सेना और आईएसआई के संरक्षण में पनप रहे थे. यह तथ्य न केवल पाकिस्तान की भूमिका को बेनकाब करता है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए भी एक चेतावनी है कि आतंक को पनाह देने वाले देश अब खुद सुरक्षित नहीं रह सकते. महत्वपूर्ण यह भी है कि जब पाकिस्तान ने 10 मई को जवाबी हमला करने का दुस्साहस किया, तो भारत की एयर डिफेंस, काउंटर ड्रोन सिस्टम और इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर तकनीक ने उसकी हर कोशिश को नाकाम कर दिया. भारत की सैन्य और तकनीकी तैयारी अब उस स्तर पर पहुंच चुकी है जहां वह न केवल हमलों को नाकाम करता है, बल्कि हमला करने वालों को जवाब भी उसी भाषा में देता है. इस पूरे ऑपरेशन का सबसे सशक्त संदेश यह है कि भारत की कार्रवाई सीमित लेकिन प्रभावी थी. भारत ने यह साबित किया कि उसका उद्देश्य युद्ध नहीं, आतंकवाद का समूल नाश है. रक्षा मंत्री ने सदन में स्पष्ट किया कि ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य सीमा पार ज़मीन कब्जाना नहीं था, बल्कि आतंकवाद के अड्डों को नेस्तनाबूत करना था. यह सटीकता, उद्देश्य की स्पष्टता और सीमित सैन्य हस्तक्षेप की रणनीति ही भारत की नई सैन्य सोच का संकेत देती है.

भारत ने इस ऑपरेशन को अपने निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के बाद रोका. यह रोक किसी अंतरराष्ट्रीय दबाव में नहीं थी, बल्कि यह एक जिम्मेदार लोकतांत्रिक राष्ट्र की वह परिपक्वता थी, जो अपनी सैन्य शक्ति का उपयोग संयम और स्पष्ट लक्ष्य के साथ करता है. ऑपरेशन सिंदूर केवल एक जवाबी हमला नहीं, बल्कि एक रणनीतिक संदेश है कि भारत अब आतंकवाद के खिलाफ मौन नहीं रहेगा. यह संदेश न केवल पाकिस्तान बल्कि उस पूरे वैश्विक तंत्र के लिए है, जो आतंकवाद को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करता है.

आज जब संसद में इस ऑपरेशन की गूंज है, तब यह अवसर है कि समूचा देश राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर सेना के पराक्रम की निर्णायकता को सराहे. क्योंकि जब देश की सीमाओं पर रण बजता है, तब संसद में मतैक्य ही सबसे बड़ा लोकतांत्रिक उत्तर होता है. भारत अब सिर्फ सहन नहीं करता, बल्कि संकल्प और शक्ति से जवाब देता है, दरअसल, ऑपरेशन सिंदूर इसकी जीवंत घोषणा है.

विधानमंडलीय समितियों का सशक्तीकरण

राजु कुमार

भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में विधायिकाएं केवल कानून बनाने वाली संस्थाएं नहीं हैं, बल्कि वे कार्यपालिका की निगरानी, वित्तीय अनुशासन और जनहित में प्रशासनिक कार्यों की समीक्षा करने का भी सशक्त माध्यम हैं. इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विधानमंडलीय समितियां एक अनिवार्य ढांचा प्रदान करती हैं. इस समिति प्रणाली की समीक्षा, सुदृढ़ीकरण और पुनर्परिभाषा के लिए गठित विशेष समिति की एक बैठक पिछले दिनों मध्यप्रदेश विधान सभा भवन भोपाल में आयोजित की गई. बैठक का उद्देश्य समिति प्रणाली की वर्तमान कार्यप्रणाली का मूल्यांकन, उसकी दक्षता को बढ़ाने के उपाय और इसे अधिक उत्तरदायी एवं परिणामोन्मुख बनाने के लिए रणनीति तय करना था.

शिमला सम्मेलन से भोपाल बैठक तक

भोपाल बैठक का बीजारोपण दरअसल नवंबर 2021 में शिमला में आयोजित 82वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में हुआ था. यह सम्मेलन ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह 1921 में शिमला में ही आयोजित पहले सम्मेलन के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था. सम्मेलन के दौरान यह महसूस किया गया कि समिति प्रणाली लोकतंत्र की आत्मा है, लेकिन उसे समसामयिक प्रशासनिक और तकनीकी संदर्भों में पुन:परिभाषित करने की आवश्यकता है. इसी भावना के तहत शिमला सम्मेलन में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि एक विशेष समिति गठित की जाए, जिसमें विभिन्न विधान सभाओं के पीठासीन अधिकारी शामिल हों. इस समिति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि समितियां महज़ औपचारिक इकाइयां न रहकर कार्यपालिका की जवाबदेही तय करने का प्रभावी माध्यम बनें. शिमला सम्मेलन के इसी प्रस्ताव का मूर्त रूप है भोपाल में आयोजित जुलाई 2025 की बैठक.

भोपाल में आयोजित बैठक की अध्यक्षता मध्यप्रदेश विधान सभा अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने की और इसमें उत्तरप्रदेश विधान सभा अध्यक्ष श्री सतीश महाना, राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी, हिमाचल विधान सभा अध्यक्ष श्री कुलदीप सिंह पठानिया, सिक्किम विधान सभा अध्यक्ष श्री मिंगमा नोरबू शेरपा, ओडिशा विधान सभा अध्यक्ष श्रीमति सुरमा पाढ़ी एवं पश्चिम बंगाल विधान सभा अध्यक्ष श्री बिमान बनर्जी सहित सभी संबंधित राज्यों की विधान सभा के प्रमुख सचिव एवं अन्य अधिकारी भी शामिल हुए.

समिति प्रणाली की आवश्यकता और भूमिका- हमारे देश की लोकतांत्रिक प्रणाली में संसद एवं विधान सभाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है. संसद या विधान सभा के सत्रों में जितनी सूक्ष्म निगरानी की आवश्यकता होती है वह सत्र में संभव नहीं हो पाता है. सत्रों की सीमित अवधि और बहसों की समयबद्धता के चलते ऐसा होना स्वाभाविक है, इसलिए विधान सभा समितियों के गठन की प्रणाली महत्वपूर्ण है. विधान मंडलीय समितियां न केवल विधेयकों की बारीकी से अध्ययन करती हैं, बल्कि सरकार द्वारा किए गए वायदों, प्रशासनिक कार्यों और योजनाओं पर भी नजर रखती हैं. लोक सभा में भी विभिन्न समितियां गठित होती हैं, जिनमें बजट पर भी विचार-विमर्श होता है. लोक सभा में समितियां बजट का अध्ययन करके उस पर सुझाव भी देती हैं.

समितियां सदन न होने पर विधायी कार्यों के लिए विधायकात्मक शाखा की तरह काम करती हैं. समितियां विधायी, वित्तीय और प्रशासकीय क्षेत्र में विधायिका के कार्यपालिका पर नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. वर्तमान में कई विधान सभाओं में समितियों का गठन चुनाव के माध्यम से होता है, जबकि कुछ समितियों के सदस्य अध्यक्ष द्वारा नामित किए जाते हैं.

श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने मध्यप्रदेश विधान सभा की समितियों की चर्चा कर इनकी आवश्यकता और भूमिका के बारे में बताया. मध्यप्रदेश में 4 वित्तीय समितियां हैं, जिनका निर्वाचन होता है. इसके अलावा अनुसूचित जाति एवं जनजाति और पिछड़ा वर्ग के लिए भी दो समितियां हैं, जिनका निर्वाचन होता है. शेष लगभग 16 समितियां ऐसी हैं, जिनमें पक्ष विपक्ष की सहमति से अध्यक्ष द्वारा नाम निर्देशित किए जाते हैं.

> **आत्मनिर्भर और प्रभावी समितियां - आगे की राह-** बैठक में यह भी विचार किया गया कि समितियों को अधिक स्वायत्तता दी जाए, उनके पास विशेष अनुसंधान व विश्लेषण संसाधन उपलब्ध कराए जाएं और उनकी सिफारिशों को केवल सुझाव भर न समझा जाए, बल्कि नीति-निर्माण में उनका व्यावहारिक उपयोग हो. यह विचार भी आया कि प्रत्येक राज्य की विधान सभा में मौजूद श्रेष्ठ समिति प्रथाओं को साझा कर एक राष्ट्रीय आचार संहिता या मार्गदर्शिका विकसित की जा सकती है. सभी राज्यों के विधान मंडलों की समितियों की जानकारी प्राप्त होने से इस दिशा में व्यापकता के साथ भावी रणनीति बनाई जा सकेगी. भोपाल में आयोजित यह बैठक समिति प्रणाली के गहन पुनर्मूल्यांकन की दिशा में एक ठोस कदम है और यह उम्मीद की जा सकती है कि भविष्य में विधान मंडलीय समितियां सुनिश्चित शासन और सक्रिय जनप्रतिनिधित्व का प्रभावशाली माध्यम बनेंगी.

विंध्य की डायरी

पर्यटन क्रांति से विंध्य के वैभव को मिलेगा नया आयाम

डा. रवि तिवारी

विंध्य के पास वह सब कुछ है जो पर्यटको को लुभाने के लिये चाहिये. प्राकृतिक अनुपम धरोहर हमारे पास है. धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य, कलकल करती नदियो पर दूध की धारा की तरह मधुर ध्वनि के साथ गिरते जल प्रपात सब कुछ है. बस इच्छा शक्ति होनी चाहिये, पर्यटन स्थल को विकसित करने की. विंध्य में पर्यटन के विकास की असीम संभावनाएं है. वर्षो बाद सरकार की नजर यहा पड़ी है. दो दिवसीय टूरिज्म कॉन्क्लेव

के माध्यम से जो मंथन हुआ है उससे निश्चित रूप से पर्यटन के क्षेत्र में क्रांति आयेगी और पर्याप्त निवेश भी आएगा. परिणाम स्वरूप पर्यटन क्षेत्र के विकास को पंख लगेगे पर यह तभी संभव हो पाएगा जब सरकार पूरी दृढ़ इच्छा शक्ति से लगी रहेगी. दरअसल कई बार सरकार घोषणा कर भूल जाती है और कई निवेश आने से रूक जाते है. सरकार की नई पर्यटन नीति और निवेशको के रूझान से ही पर्यटन क्रांति संभव हो पायेगी. अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य, तानसेन, बाणभट्ट, बीरबल और सफेद बाघ की यह धरती है और इसका समृद्धशाली इतिहास रहा है. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मानचित्र में प्रचारित और प्रदर्शित करने की जरूरत है.

होल्ड मंडल अध्यक्षों के नामों का ऐलान

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने सिंगरौली और सतना के होल्ड मंडल अध्यक्षो के नाम की घोषणा कर दी है. कसमकस के बीच नामो की घोषणा से कई नेताओं को झटका लगा है. सरई, जयंत व निवास मंडल के अध्यक्ष की घोषणा लटकी हुई थी. जयंत मंडल के निवर्तमान एवं उनके समर्थको को तगड़ा झटका लगा है. दरअसल कई मंडल अध्यक्षो की घोषणा हो गई थी लेकिन तीन मंडल अध्यक्षो के नाम की घोषणा नही हो पाई थी. अभी भी देवसर व जियावन मंडल के अध्यक्ष होल्ड में है. सबसे ज्यादा प्रतिष्ठा दांव पर जयंत मंडल को लेकर नेताओ की लगी थी. लेकिन नाम की घोषणा होने के बाद तगड़ा झटका लगा है. उधर सतना में भी होल्ड पर चल रहे दो मंडल अध्यक्षो की घोषणा कर दी गई है.

खादी के आगे लाचार खाकी

खाखी वर्दी के आगे बड़े से बड़े सूरमाओ की पतलूम गीली हो जाती है, मजाल नही कि कोई आख उठाकर देख ले पर जब बात खादी के सामने खड़े होने की आती है तो फिर खाखी वर्दी बेबस और लाचार नजर आती है. रीवा के चोरहटा थाने में ऐसा ही कुछ देखने को मिला. थाने मे बवाल का मामला उस समय हुआ जब सीएम रीवा आ रहे थे. भाजपा की किरकिरी हुई और मामला संगठन तक पहुंच गया. आनन-फानन सांसद और जिलाध्यक्ष को थाने पहुंचकर मोर्चा सम्भालना पड़ा. सेमरिया से कांग्रेस विधायक अभय मिश्रा द्वारा युवक के साथ कथित मारपीट का मामला थाना पहुंचा. फिर क्या था युवक को न्याय दिलाने भाजपा के पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी थाने पहुंचे. एफआईआर को लेकर खाखी के साथ जमकर तनातनी हुई और यहा लाचार- थाना प्रभारी हाथ जोड़ कर दादा-दादा.....कहते नजर आए. महिला सीएसपी को असंवेदनशील औरत.....कहा गया. फिर क्या था थाना प्रभारी केवल हाथ जोड़ कर शांति की अपील करते रहे. अगर यही घटनाक्रम एक आम आदमी करता तो शायद इतनी धाराएं लगती कि कई साल तक जमानत न होती. कानून का पाठ और कर्तव्यनिष्ठा की शपथ लेने के साथ खाखी वर्दी धारण कर कर्तव्य की शपथ लेने वाले अपने ही थाने में लाचार नजर आ रहे थे और करते भी क्या क्योंकि सामने सत्तापक्ष के नेताजी थे डर कुर्सी जाने का भी था पर यहा जाबाज महिला सीएसपी अपनी वर्दी के शान और सम्मान के लिये ड़टी रही. यहा गौर करने वाली बात यह है कि पूर्व विधायक ने पीड़ित के साथ खड़े होकर लड़ाई लड़ी. दरअसल हमेशा सत्ताधारी कोई भी नेता इससे परहेज करता है. इस लिये पूर्व विधायक साधुवाद के पात्र है. रही बात हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाने की तो इसमे थाना प्रभारी की कोई गलती नही है. क्योंकि खुद प्रदेश के डीजी साहब ने कह रखा है कि जन प्रतिनिधियो का पुलिस सम्मान करे और सैल्यूट मारे.

देश में सरकारी स्कूल इतने बदहाल क्यों?

राजस्थान के झालावाड़ जिले के सरकारी स्कूल की छत गिरने से मलबे में दबकर 7 बच्चों की मौत होना मात्र एक खबर नहीं है. यह पूरी तरह से शिक्षातंत्र की लापरवाही का परिणाम है. देश के हर राज्य में सरकारी स्कूलों की दशा यही है. केंद्र-राज्य सरकारें रोज नए-नए प्रयोग कर रही हैं और मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाने के स्थान पर सिर्फ लीपापोती कर रही हैं. ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि किसी विद्यालय में ऐसा हादसा हुआ हो. इससे पहले छत का प्लास्टर गिरना, पंखा गिरना, टूटी बेंच से गिरकर बच्चों का घायल होना आम बात है. देश के सरकारी स्कूलों के हाल इतने खराब हैं कि हर राज्य के आधे से अधिक विद्यालय खुद की सुरक्षा की मदद मांग रहे हैं. राजस्थान में 2200 स्कूलों की दशा जर्जर से भी बदतर है. कहीं पर बैठने के लिए कुर्सी-मेज, बेंच नहीं हैं, तो बच्चे खुले मैदान में दरी बिछाकर बैठते हैं. छप्पर के नीचे, पेड़ के नीचे या फिर मंदिर आदि में कक्षाओं का लगना, हमारी नियति का हिस्सा हो गया है. शिक्षा मंदिरों में 70 प्रतिशत बच्चे तो दोपहर के मिड डे मील के लिए आते हैं और शिक्षक उन्हें भोजन कराकर निश्चिंत हो जाते हैं. राजस्थान, जहां पर यह हादसा हुआ वह पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का चुनाव क्षेत्र है. राजस्थान के शिक्षा मंत्री का भी इस क्षेत्र से गहरा नाता है और वह नियमित दौरे भी कर रहे हैं.

आखिर उनके दौरों के दौरान ऐसे विद्यालय कहां गायब हो जाते हैं, जहां पर व्यवस्थाएं मदद मांगती हैं? तंत्र की राजनीति इस स्तर पर है कि अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षक बनने के लिए मंत्री तक की सिफारिश होती है, वह भी प्रतिनियुक्ति पर. शिक्षकों को तबादले के लिए पूरे सालभर जूझना पड़ता है. वह तबादले के लिए कभी अपनी मां को बीमार कर देते हैं या फिर बीमार पत्नी की सेवा की बात कहते हैं. अपवाद छोड़ दे, तो ग्रामीण क्षेत्रों में जाने के स्थान पर प्रतिनियुक्ति करवाने में ही पूरा ध्यान रखना शिक्षा तंत्र में बीमारी बन चुका है. इन स्थितियों में विद्यालय की छत गिरने वाली है या फिर तपती धूप में पढ़ने की मजबूरी, शिक्षकों को देखने की फुर्सत ही नहीं मिलती.

\- मनोज वार्ष्णेय

निशानेबाज

हमारा पद बचाओ, करो चमत्कार 2 मंत्रियों की शनिदेव से गुहार

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, महाराष्ट्र के 2 मंत्री शनिदेव की शरण में गए और उनसे प्रार्थना की कि हमारा मंत्री पद बचाओ. इसे कहते हैं आस्था, श्रद्धा और भक्ति!

हमने कहा, जब व्यक्ति संकट में पड़ता है तो उसे भगवान याद आते हैं. माणिकराव कोकाटे और संजय शिरसाट दोनों ही मंत्रियों की कुर्सी खतरे में पड़ी है. इसलिए उन्होंने नंदूरबार जिले के शनि मंडल स्थित शनि मंदिर जाकर गुहार लगाई. आपने सुना होगा- दुख में सुमिरन सब करें, सुख में करे ना कोय, जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे होय! जब सत्ता की मस्ती चढ़ी रहती है तब ईश्वर याद नहीं आता. मुसीबत घेर लेती है तो किसी मंदिर या संत-महात्मा के दरबार में जाते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, शनिदेव न्याय के देवता हैं इसलिए इन दोनों मंत्रियों का न्याय करेंगे. शनिदेव सूर्य के पुत्र तथा यम के बड़े भाई हैं. सूर्य की संतानों में शनि, यम, यमुना, वैवस्वत मनु, ताप्ती, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनी कुमारों व सावर्णी मनु का समावेश है. शनि की अपने पिता सूर्य से

कभी नहीं पटी. दोनों एक-दूसरे से दूर रहते हैं. शनि बारी-बारी से सभी राशियों में आता है और साढ़े सात वर्ष तक व्यक्ति पर शनि की दशा रहती है. इन मंत्रियों को भी लगता होगा कि उन पर शनि की साढ़े साती चल रही है, जिसमें धन, प्रतिष्ठा और स्वास्थ्य का नुकसान उठाना पड़ता है. शनि जब उतरता है तो अच्छा फल देकर जाता है. लोग शनि को प्रसन्न करने के लिए तेल चढ़ाते हैं और शनिवार का उपवास भी करते हैं. शनि शिंगणापुर की खूबी है कि वहां घरों में ताला नहीं लगाया जाता. वहां चोरी नहीं होती. कहते हैं कि एक बार किसी चोर ने चोरी की थी तो वह अंधा हो गया था. न वहां घरों में किवाड़ हैं न ताले. शनि मंदिर में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है. वह दूर से दर्शन करती हैं. पुरुष गीला वस्त्र पहने हुए लंबी कतार में जाकर शनिदेव को तेल चढ़ाते हैं.

हमने कहा, तेल की रिसायकलिंग होती है. शनिदेव को चढ़ा हुआ तेल फिर दुकानों में वापस आ जाता है और दुकानदार फिर से से उसे भक्तों को बोतल में भरकर बेच देते हैं. देश के अन्य शनि मंदिर में भी जमा होनेवाले तेल का स्टाक फिर सस्ते दामों में दूकानदारों को खपा दिया जाता है. जहां तक मंत्रियों की बात है, शनिदेव व्यक्ति का कर्म देखकर न्याय करते हैं. कर्म फल से कोई नहीं बच पाता.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11977

\- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4		■	5	6
7				■	8		
	■	9		10	■	■	
■	11		■		■	12	
13			■	14	15		■
16		■	17				18
19		20	■	21		■	
	■	22	■		23		

बाएं से दाएं

1.गुदगुदी या खुजली होना, किड़ों का रेंगना जलान है 5. सांसारिक वस्तुओं को सबकुछ समझना, प्रेम, ममता 7. दाता द्वारा अपनी तौल के बराबर अन्न-द्रव्यादि का दान 8. प्रकाश, आभा, कांति 9. छत्र 11. पुरूष जाति का 12. मंत्र-तंत्र का प्रयोग, जादू 13. किसी कार्य में विशेष रूप से निपुण, कुशल 14. पचाने अथवा पकाने वाला 16. प्राण, जीवन, ज्ञान 17. स्थिर, कायम (उर्दू) 19. झंडा, ध्वजा 21. ककड़ी 22. पहरा, भ्रमण, घूमना (उर्दू) 23. नाक का एक रोग

ऊपर से नीचे

1. भूसीवाला, तुषयुक्त अन्न (सं.) 2. प्यारा सा दुलारा लड़का, प्रेमी का संबोधन 3. उत्तम आचरण, अच्छा चाल-चलन (सं.) 4. धिक्कार, भर्त्सना (उर्दू) 5. एक चिकना कोमल पदार्थ जिससे मधुमक्खियों का छत्ता बना होता है 6. शब्दों का ठीक प्रकार से उच्चारण न करने के कारण रुक-रुक कर बोलना 10. जौहरी 11. नूतनता, नयापन 12. बड़ी टोकरी 13. राजा, सृष्टिकर्ता, ब्रम्हा (सं.) 15. चक्कर खाना, चकित होना या करना 18. रगड़ने की क्रिया या भाव, अत्यधिक परिश्रम करना 20. कौआ, बोतल, शीशी आदि की डाट

Solution 11976

अ	त्या	धु	नि	क	■	छ	त्र
र	ग	■	ज	म	घ	ट	■
ह	■	म	■	■	ना	प	ना
र	ज	त	पा	त्र	■	टा	ई
■	क	ल	म	■	बो	ना	■
में	■	बी	र	ब	ल	■	प
ढ	ब	■	■	स	चा	व	ट
क	री	ब	■	ना	ल	■	ल

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्योमें ख्याति प्राप्त होगी, नई योजनाओं में विचार विमर्श होगा, वर्ष के मध्य में भूमि भवन आदि के मामलों में सफ्लता मिलेगी, वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक क्षेत्र में विवाद होगा, व्यापार व्यवसाय में भागदौड़ अधिक करना पड़ेगी, निकट संबंधी के कारण मानसिक तनाव रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यापार के क्षेत्र में भागदौड़ रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की राजनीति के क्षेत्र में विवाद की स्थिति आयेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय में भागदौड़ अधिक करना होगी, निकट संबंधी के कारण तनाव रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि कार्यो में सफ्लता मिलेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग रहेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यापार में भागदौड़ अधिक करना होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आपसी व्यक्तियों से तनाव रह सकता है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शांतिप्रिय, गंभीर, महत्वाकांक्षी होगा, अपने कार्य में सजग रहने वाला होगा, ईमानदार और कर्मठता से अपना काम करेगा, एक से अधिक साधनों में कमाई करेगा, सौम्य एवं मृदुभाषी होगा, दस्तकारी के कार्यो में विशेष रूचि रहेगी.

मेष- जिसे पसंद करते हैं, उनसे मिलकर खुशी होगी, सामाजिक कार्यक्रम में भाग लेंगे, महत्वपूर्ण कार्य करना उचित होगा, साधनों में वृद्धि होगी.

वृषभ- विरोधी आपकी योजना जानकर नुकसान पहुंचा सकते हैं, समय का उपयोग कर विवादों को टालना हितकर रहेगा, आर्थिक समस्या का समाधान होगा.

मिथुन- कुछ लोग आपकी नजदीकी का फायदा उठाने की कोशिश करेंगे, उपहार या सम्मान प्राप्त होगा, उपयोगी उपकरणों की खरीद बिक्री हो सकती है.

कर्क- अपनी कमियों को दूर करने की हर संभव कोशिश करेंगे, स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें, निजी व्यवसायिक कार्यो में गति आयेगी, रोजगार की प्राप्ति होगी.

सिंह- दूसरों के मामले से दूर रहें,विवाद में फंस सकते हैं, पारिवारिक यात्रा प्रसन्नतादायक रहेगी, व्यवसायिक कार्यो में गति आयेगी, स्वास्थ्य लाभ होगा.

कन्या- बिना आगे पीछे सोचे शुरू की गई योजना में नुकसान की संभावना है, धन की कमी होगी, आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी, यात्रा में सावधानी रखें.

तुला- धन के अभाव में योजना रूक सकती है, नये मित्र बनेंगे, शिक्षा संतान के कार्यो में सफ्लता मिलेगी, निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

वृश्चिक- पसंदीदा व्यक्ति को अपनी भावनाओं से अवगत करायें, ताकि उपेक्षा से बच सके, ऐसी घटना हो सकती है, जिससे आपको लाभ होगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

धनु- धन लाभ होगा, हर क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करेंगे, नये संपर्क बनेंगे, दूर गये मित्र के संबंध में प्रिय समाचार मिलेगा, नई जबावदारी आयेगी.

मकर- अचानक नई समस्या से विचलित हो सकते हैं, लेकिन युक्ति से मुसीबत टल जायेगी, आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी, मित्रता उपयोगी रहेगी.

कुम्भ- पारिवारिक आयोजन में शामिल होकर खुशी होगी, परिश्रम अधिक करना होगा, महत्वपूर्ण काम बनेगा, मनोमालिन्य की स्थिति भी बन सकती है.

मीन- कार्यस्थल पर आपके लिये सबकुछ आसान होता जायेगा, सामाजिक कार्यो में भाग लेंगे, उद्देश्यपूर्ति का योग है, शुभ समाचार प्राप्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

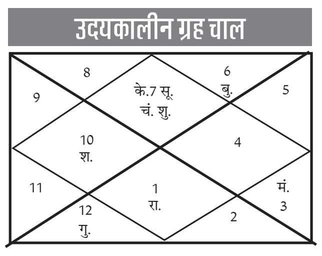

पंचांग

रा.मि. 07 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल पंचमी भौमवासरे रात 12/43, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे रात 8/38, शिव योगे रात 5/2, वव करणे सू.उ. 5/23 सू.अ. 6/37, चन्द्रचार कन्या, पर्व- श्रीनागपंचमी, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल पंचमीं को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से वस्त्र के भाव में समता रहेगी, धान्यों में तेजी होगी, चारंदी में घटाबढ़ी होगी, केशर हल्दी, मजीठ, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. भाग्यांक 7133 है.

SUDOKU 7109

		5			8			3
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6			7			1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
6			2			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7108

9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8